ऐतिहासिक सर्वदलीय सम्मेलन और नेहरू रिपोर्ट

डॉ. दिनेश कुमार सिंह

भारतीय नेताओं ने ब्रिटिश शासन की चुनौती स्वीकार करते हुए 28 फरवरी, 1921 ई० को दिल्ली में डॉ० एम० ए० अन्सारी की अध्यक्षता में एक सर्वदलीय सम्मेलन का आयोजन किया। कांग्रेस सहित सम्मेलन में उपस्थित सभी संस्थाएँ इस बात पर एक हो गयीं कि 'पूर्ण उत्तरदायी शासन' को आधार मानकर ही भारत की वैधानिक समस्या पर विचार किया जाना चाहिए। दो महीने में सम्मेलन की कुल मिलाकर 25 बैठकें हुई और अधिकांश प्रश्नों पर सहमति हो गयी इसके बाद 19 मई, 1928 ई० को डॉ० अन्सारी के सभापतित्व में बम्बई में सम्मेलन की बैठक हुई, जिसमें यह निश्चय हुआ कि भारतीय विधान के सिद्धान्त का प्रारूप तैयार करने के लिए पण्डित मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की जाय, जो 1 जुलाई, 1928 तक अपनी रिपोर्ट दे दे और इस प्रारूप को देश की विभिन्न संस्थाओं के पास भेजा जाय। इस समिति में सर तेज बहादुर सप्रु, सर अली इमाम, श्री एम० एस० अणे, सरकार मंगल सिंह, श्री शुएब कुरैशी, श्री जी० आर० प्रधान तथा श्री सुभाषचन्द्र बोस सम्मिलित थे। श्री जवाहरलाल नेहरू को इसका सचिव नियुक्त किया गया। समिति ने तीन माह के अनवरत परिश्रम के बाद एक रिपोर्ट तैयार की, जो 'नेहरू रिपोर्ट' के नाम से प्रसिद्ध है।